#३६: सत्यता-१२: भ्रमित मानव कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र

दिनांक -१२/१२/२०११

भ्रमित मानव कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र होता हुआ देखने को मिला | यह समझ में आने से पता लगता है कि मानव सही फल का अपेक्षु है | सही फल का मतलब है समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण | यह सहअस्तित्व में अनुभव के बिना किसी एक व्यक्ति में भी प्रमाणित नहीं होता | इसे भली प्रकार से जाँचा है, अनुभव किया है, प्रमाणित किया है | यही मूलतः भ्रमित मानव और निर्भ्रम मानव के बीच दूरी है | भ्रमित मानव में चार विषय, पांच संवेदनाओं का प्रकाशन है | इसे संतुलित बनाकर रखने का नित्य प्रयास है- यही भ्रमित मानव का कार्यक्रम है | मानव शब्द में नर-नारी का सम्बोधन है | इस क्रम में सही फल परिणाम के लिये मानव को सहअस्तित्व में अनुभव करना बहुत जरूरी है | अनुभव ही जागृति का नाम है | अनुभव सह-अस्तित्व में ही होता है और कहीं होतानहीं | अनुक्रम से होना ही अनुभव है | दूसरी भाषा में अनुक्रम से होने का दृष्टा, रहने का कर्ता- भोक्ता होता है | यही ज्ञाता का स्वरूप है | इस क्रम में मानव, मानव संचेतना पूर्वक जीना होता है |

मानव संचेतना विधि से मनोविज्ञान में पारंगत होना फलित रूप में मानव संचेतनावादी समाज के रूप में अर्थात समाज सूत्र व्याख्या के रूप में हो पाना बनता है | इन्हीं दो उपलब्धियों के साथ स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी होना रहना सहज हो जाता है | इस गति से अर्थात मानव संचेतनावादी गति से नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक जीना होता है | इस क्रम से जीने के लिये हर मानव सहमत होता है | यह ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्मत होना पाया जाता है | शिक्षा में सार्थकता ज्ञान, विवेक, विज्ञान ही है | अध्ययन का सार्थकता, अध्यापन का सार्थकता यही है | इससे वंचित होकर कितना दूर हम भागें इससे लाभ होने वाला नहीं है | हर मनुष्य श्रेष्ठता चाहता है | श्रेष्ठता का आंकलन, जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम होना देखा गया, समझा गया, अनुभव किया गया और प्रमाणित किया गया है |

इसे शिक्षा विधि से अर्थात विकल्पात्मक ज्ञान, विज्ञान, विवेक को विकल्पात्मक चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सर्वमानव प्राप्त कर सकते हैं | दुसरे विधि से अर्थात विकल्प ज्ञान और अध्ययन विधि को छोड़कर, इसे बदलने से, अन्य विचारधाराओं के साथ, अन्य ध्यान विधियों के साथ मिलाने से, घटाने से अध्ययन विधि सफल होने वाला नहीं है | अनुसन्धान ही फिर उपाय है | समाधि के बिना अनुसन्धान हो नहीं सकता | समाधि के लिए साधना हर मानव के लिए संभव नहीं है | अभी मानव भ्रम वश, अहंकार वश, अस्मिता वश, व्यक्तिवादितावश, 'अपने मनोगत' अनुसार समझना चाहता है | इसीलिए इस 'विकल्प प्रस्ताव' को बदलने के लिए सोचा जा सकता है | जबकि, ऐसे सम्पूर्ण प्रयास विफल होने के लिए ही हैं | विकल्प विधि से ही इसका अध्ययन सफल है | विकल्प को पाने का मतलब है प्रमाणित होना | इसे प्रयोग कर देखा गया है | लोकव्यापीकरण होना शेष है | इसमें भी बहुत सारे शोधकर्ता लग चुके हैं | इस क्रम में यह स्पष्ट होता है कि मानव ही केवल इस धरती पर अपराध कृत्य का आधार है | चारों अवस्थाओं में अर्थात पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में से

केवल ज्ञानावस्था में मानव गण्य होता है अथवा मानव का गणना है | इस स्थिति में मानव ही सभी गलती का कारण है | अर्थात इसे गलती को अध्ययन करने वाला, समझने वाला, प्रमाणित करने वाला, होना समझ में आता है | इस विधि से मानव का प्रयोजन को पहचानना, समझना हो गया | मानव शुभ ही चाहता है | करता है अशुभ | तब फल परिणाम शुभ के अर्थ के विपरीत होना स्वाभाविक है | जैसा अभी मानव जात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में गण्य है | इन तीनों प्रकार के मानव के करतूत से ही फल परिणाम होना पाया जाता है | अन्य तीनों अवस्था के सृष्टि का प्रत्येक इकाई अपने उपयोगिता पूरकता के साथ होता हुआ, रहता हुआ आंकलित है | इस क्रम में मानव का मूल्यांकन होना होता है | जैसा अभी धरती बीमार हो गया, बीमार होने के लिये कोई प्रयत्न नहीं किया | भ्रमवश मानव अच्छा करने के क्रम की बुराइयों को कर दिया | जैसा खनिज कोयला, खनिज तेल, विकिरणीय धातुओं का प्रयोग, खनिज विधि से इन तीनों वस्तुओं को प्राप्त किया, इसी को ऊर्जा का आधार माना या स्रोत माना, इसका प्रयोग करता आया | इन तीन ऊर्जा स्रोतों के आधार में से विकिरणीय धातु का प्रयोग मानव के संदर्भ में अहित कार्य हो गया | पूरा धरती के मानवों में सर्वोपरि, विज्ञानी कहलाने वालों के आधार पर विकिरणीय धातुओं का प्रयोग हुआ | विकिरणीय धातुओं का प्रयोग में यही आंकलित होता है कि सूर्य में जो ताप है वह ताप पैदा हुआ या नहीं | ऐसा सुनने में आता है कि इस धरती पर मानव लगभग तीन हजार बार विकिरणीय धातुओं द्वारा विस्फ़ोट का प्रयोग कर चुका है | सभी प्रयोगों से उत्पन्न ताप इसी धरती में समाया ही है | इसी के आधारभूत विधि से धरती तापग्रस्त हो गई, ऐसा सोचा जा सकता है |

इस तापोग्रस्त धरती पर ऋतु परिवर्तन होना स्वाभाविक है | इसके साथ में खनिज कोयला, खनिज तेल का प्रयोग हुआ जिसके फल परिणाम में प्रदूषण छा जाना, धरती तापग्रस्त होना, ऋतुकाल असंतुलित होना, प्राकृतिक घटनाएँ बढ़ना, इन सभी बातों को देखने से यही ज्ञान होता है कि मानव अपने अपराध कृत्यों से बाज आना आवश्यक है | साथ में समाधान,समृद्धि,अभय,सहअस्तित्व सहज जीने का रास्ता हाथ लगना, निर्देशित होना, स्पष्ट होना आवश्यक है | इस विधि से सोचने पर साफ दिखता है कि मानव द्वारा धरती के साथ किये जाने वाले सभी अपराध कृत्यों, इसी के साथ तीनों अवस्थाओं के साथ की प्रकृति के साथ किये जाने वाले अत्याचार से मुक्त होना आवश्यक सिद्ध होता है | मानव में इसे अपनाने के लिये कुछ लोगों में स्वीकार होता है, सहमति सब लोगों में होता है | इस आधार पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा को प्रस्तावित किया गया है | यही एकमात्र प्रस्ताव है धरती पर मानव जात अपराध-मुक्त होने के लिये,भ्रम-मुक्त होने के लिये | सर्वाधिक मानव तब समाधान, समृद्धि,अभय, सह-अस्तित्वपूर्वक जीना सहज होता है | इन्हीं सब सम्भावनाओं के साथ प्रस्ताव प्रस्तुत है | इसे हर व्यक्ति परीक्षण कर देख सकता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो! |

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत